

| | | | | | |
|---|--------------------------------|--|---|-------|-------|
| द्वितीयसत्रार्थम् | DSCC 20 सांख्यप्रवचनभाष्यम् | आधारग्रन्थ:- . सांख्यप्रवचनभाष्यम् | | | |
| | | प्रस्तावना – महर्षिकपिलप्रणितसांख्यसूत्रं सांख्यदर्शनस्य प्रमुखो ग्रन्थः अस्ति। सांख्यसूत्रेषु विद्यमानानां गंभीररहस्याणां उद्घाटनं यथा प्रवचनभाष्ये भिक्षुमहोदयेन कृतं तद्विदुषाम् सर्वादौ ग्राह्या दृश्यन्ते। अतः छात्राणां अध्येतृणां च उपकाराय पाठे सन्निविष्टः। | | | |
| | | उद्देश्यम् – सांख्यसिद्धान्तानां यथार्थं अवबोधनम्। | | | |
| | | 1. प्रथमविषयाध्यायस्य (प्रथमविषयाध्ययस्य एकनवतिसूत्रादारभ्य विंशत्युत्तरशतं सूत्रं यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | | 2. प्रथमविषयाध्ययस्य (प्रथमविषयाध्यायस्य एकविंशत्युत्तरशतं सूत्रादारभ्य चत्वारिंशत्युत्तरशतं सूत्रं यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | | 3. प्रथमविषयाध्ययस्य (प्रथमविषयाध्यायस्य एकचत्वारिंशत्युत्तरशतं सूत्रादारभ्य अध्यायसमाप्तिं यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | | 4. द्वितीयप्रधानकार्याध्यायः | 1 | 1 | 16-20 |
| | | फलतांशः— विवेकज्ञानस्य मोक्षहेतुत्वनिरूपणम्, कार्यकारणवादादिप्रमुखसांख्यसिद्धान्तानां विषये छात्राणां ज्ञानवृद्धिः भविष्यति। | | | |
| | | सङ्गतिः- प्रथमसत्रार्थे समाहितचेतसां योगप्राप्त्युपायनिरूपितः समाधिपादे कथं व्युत्थितचेतसामपि योगसम्प्राप्तिः भविष्यति तदर्थं द्वितीयसाधनपादस्य योजनं जिज्ञासूनां छात्राणामुपकाराय कल्पते। | | | |
| | | DSCC 21 व्यासभाष्यद्वितीयपादः | आधारग्रन्थ:- व्यासभाष्यद्वितीयपादः | | |
| प्रस्तावना – योगसूत्राणां युगोपयोगी सार्वकालिकी च महत्त्वं दृष्ट्वा व्यासदेवेन अस्योपरि भास्यविरचिता अतो व्यासभाष्येत्यभिधीयते अस्य अध्ययनेन योगसिद्धान्तानां यथार्थज्ञानं भविष्यतीति जिज्ञासूनां छात्राणामुपकाराय च कल्पितः। | | | | | |
| उद्देश्यम् – योगसिद्धान्तानां यथार्थं अवबोधनम्। | | | | | |
| 1. साधनपादः (आदिसूत्रादारभ्य द्वादशसूत्रं यावत्) | 1 | | 1 | 16-20 | |
| 2. साधनपादः (त्रयदशसूत्रादारभ्य सप्तविंश सूत्रं यावत्) | 1 | | 1 | 16-20 | |
| 3. साधनपादः (अष्टाविंसूत्रादारभ्य पञ्चत्रिंशसूत्रं यावत्) | 1 | 1 | 16-20 | | |

| | | | | | |
|--|--|--|---|---|-------|
| | | 4. साधनपादः (षडत्रिंशसूत्रादारभ्य पादसमाप्तिसूत्रं यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | फलितांशः— क्रियायोग-अविद्या-हेय-हेयहेतु-हान-हानोपाय-अष्टाङ्गयोगादि विषये छात्राणां बोधः भविष्यति। | | | | |
| | सङ्गतिः- प्रथमसत्रार्द्धे सांख्यदर्शनोक्तपञ्चविंशतिपदार्थानां सम्यग्ज्ञानं सांख्यशास्त्रस्य विवेकख्यातेः चावगमनादनन्तरं अन्तकरणानां लक्षण-वृत्ति-विभागपुरसरः प्रकृतिपुरुषविवेकेन मोक्षोपायविज्ञानाय ग्रन्थसमाप्तिं यावत् योजनं जिज्ञासूनां छात्राणामुपकाराय कल्पते। | | | | |
| | | आधारग्रन्थः- सांख्यतत्त्वकौमुदी (एकत्रिंशत्कारिकादारभ्य ग्रन्थसमाप्तिं यावत् | | | |
| | | प्रस्तावना – सर्वतन्त्रस्वतन्त्रेण विरचिता इयं सांख्यतत्त्वकौमुदी विदुषां ग्राह्या वर्तते । तस्मात् छात्राणां कृते उपकाराय कल्पितास्ति । | | | |
| | | उद्देश्यम् – सांख्यसिद्धान्तानां यथार्थं अवबोधनम्। | | | |
| | DSCC 22 | 1. सांख्यतत्त्वकौमुदी (त्रयत्रिंशतः चतुर्त्रिंशत्कारिकां यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | सांख्यतत्त्वकौमुदी | 2. सांख्यतत्त्वकौमुदी (पञ्चचत्वारिंशत्कारिकातः पञ्चपञ्चासत्कारिकां यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | | 3. सांख्यतत्त्वकौमुदी (षडपञ्चाशत्कारिकातः षडषष्टीकारिकां यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | | 4. सांख्यतत्त्वकौमुदी (सप्तषष्टीकारिकातः ग्रन्थसमाप्तिं यावत्) | 1 | 1 | 16-20 |
| | फलितांशः— अन्तकरणानां लक्षण-वृत्ति-विभागस्य च विशदपरिचयं प्राप्स्यते। प्रत्यसर्ग-चतुर्दशविधभूतसर्गादि विषये छात्राः अवगताः दक्षाः च भविष्यन्ति। बुद्धेः महत्त्वं-विपर्ययभेदाः-स्थूलसुक्ष्मशरीरोत्पत्तिः-कैवल्यभेदादि विषये छात्राणां अध्येतृणां च बोद्धसिद्धिः भविष्यति। | | | | |

| | | | | |
|--|---|---|-------|-------|
| | <p>सङ्गतिः- सांख्ययोगदर्शनयोः सिद्धान्तानां अध्ययनादनन्तरं अनयोः इतिहासआचार्यपरम्परासामाजिकोपयोगितायाः विचारो कर्तव्यः इति पत्रमिदम् छात्राणां अध्येतृणां च उपकाराय नयोजितः।</p> | | | |
| <p>DSCC 23 सांख्ययोगदर्शनस्य इतिहासः</p> | <p>आधारग्रन्थः- सांख्ययोगदर्शनस्य इतिहासः</p> | | | |
| | <p>प्रस्तावना- वास्तविकतत्त्वज्ञानस्याधिगमं सांख्ययोगयोरन्तरा न कर्तुं शक्नुम अतो मोक्षसाधनभूता अध्यात्मविद्या अनादिकालत एव प्रचलिता। अतोऽत्र एतयोः विकासक्रमः प्रमुखणां आचार्याणां च परिचयः ज्ञातव्यः।</p> | | | |
| | <p>उद्देश्यम्- सांख्ययोगदर्शनपरम्परायाः सामाजिकरणम्।</p> | | | |
| | 1. सांख्याचार्यकपिलः, सांख्यषडाध्यायी | 1 | 1 | 16-20 |
| | 2. सांख्यदर्शनस्य आचार्यपरम्परा | 1 | 1 | 16-20 |
| | 3. योगदर्शनस्येतिहासः योगपरम्पराश्च | 1 | 1 | 16-20 |
| 4. सांख्ययोगदर्शनस्य साम्प्रतिकोपादेयता | 1 | 1 | 16-20 | |
| <p>फलितांशः-सांख्ययोगदर्शनस्य इतिहासविषये छात्राणां बोधवर्धनम्। एतयोः दर्शनयोः प्रायोगिकाध्ययनेन नूनं छात्राणां व्यक्तित्वविकासः भविष्यति, येन तेषां सामाजिकजीवनं शृङ्खलितं सुसमृद्धं च भविष्यति।</p> | | | | |
| <p>सङ्गतिः- सांख्यदर्शनस्य प्रयोजनविचारः तृतीयसत्रार्द्धे प्रथमपत्रे अध्येतृणां च उपकाराय नयोजितः।</p> | | | | |